www.rachnakunj.com

सोच बदलो, इंडिया बदलो

डॉ. कृष्णकांत श्रीवास्तव

भारत एक युवा देश है। यहां की 65% जनसंख्या 35 वर्ष से कम उम्र की है। इतनी बड़ी युवा शक्ति किसी भी राष्ट्र के लिए वरदान होती है, लेकिन यह शक्ति तभी फलदायी सिद्ध होती है जब उसमें सकारात्मक सोच, सशक्त नेतृत्व और परिवर्तन की ललक हो। आज भारत को सबसे अधिक जरूरत है – सोच बदलने की। "सोच बदलो, इंडिया बदलो" केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक आंदोलन है, जो भारत को एक सशक्त, विकसित और समावेशी राष्ट्र में परिवर्तित कर सकता है।

सोच की ताकत

सोच वह बीज है, जिससे व्यवहार, आदतें, समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है। यदि हम सकारात्मक, समावेशी और रचनात्मक सोच रखते हैं, तो उसका असर हमारे कार्यों और समाज पर स्पष्ट दिखाई देता है। वहीं, नकारात्मक और संकुचित सोच केवल समस्याओं को जन्म देती है।

उदाहरण के तौर पर, यदि कोई युवा सोचता है कि "सरकारी नौकरी ही सफलता है", तो वह केवल सीमित अवसरों की ओर देखेगा। लेकिन अगर वह सोचता है कि "मैं अपने हुनर से कुछ नया कर सकता हूँ", तो वह उद्यमिता, स्टार्टअप और नवाचार की दिशा में आगे बढ़ेगा। यही सोच है जो भारत को आत्मनिर्भर बनाएगी।

युवा सोच को क्यों बदलना जरूरी है?

भारत में आज भी कई युवा बेरोजगारी, सामाजिक भेदभाव, भ्रष्टाचार और नशे की लत जैसे समस्याओं से घिरे हैं। इसका मुख्य कारण सिर्फ संसाधनों की कमी नहीं है, बल्कि सोच की रुकावट है। अगर युवा सोच ले कि "परिस्थितियाँ मेरी किस्मत तय करेंगी", तो वह हमेशा हार मानेगा। लेकिन अगर वह माने कि "मेरे विचार और कर्म ही मेरी किस्मत तय करेंगे", तो वह बदलाव लाएगा।

युवाओं को चाहिए कि वे चुनौतियों को अवसर मानें, असफलताओं से सीखें, और निरंतर आत्मविकास के पथ पर आगे बढ़ें।

सकारात्मक सोच से बदलाव कैसे संभव है?

सोच बदलने का अर्थ है – आलोचना से समाधान की ओर बढ़ना। भारत में यदि हम भ्रष्टाचार, जातिवाद या लिंगभेद को खत्म करना चाहते हैं, तो पहले हमें अपनी सोच से इन्हें निकालना होगा। जब कोई युवा यह सोचता है कि "मैं जात-पात नहीं मानता", तब समाज में समरसता आती है। जब कोई लड़की यह सोचती है कि "मैं किसी लड़के से कम नहीं", तब समानता बढ़ती है। जब कोई बेरोजगार यह सोचता है कि "मैं खुद अवसर पैदा करूंगा", तब भारत में नए रोजगार जन्म लेते हैं।

शिक्षा में सोच का बदलाव

आज भारत को केवल डिग्रीधारी नहीं, बल्कि विचारशील, रचनात्मक और सशक्त युवा चाहिए। हमारी शिक्षा प्रणाली को भी सोच में बदलाव लाना होगा – रट्टा प्रणाली से हटकर नवाचार, संवाद और कौशल पर आधारित शिक्षा की ओर बढ़ना होगा।

शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी पाना नहीं, बल्कि इंसान को समाज के लिए उपयोगी बनाना होना चाहिए। जब युवा "अंक" से अधिक "अंकुश" पर ध्यान देंगे, यानी अपने व्यवहार, दृष्टिकोण और विचारों पर काम करेंगे, तभी असली शिक्षा संभव होगी।

समाज को बदलने वाली सोच

हमारा समाज आज भी रूढ़िवादिता और परंपराओं की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है। लेकिन युवा पीढ़ी में इतनी शक्ति है कि वह इन बेड़ियों को तोड़कर एक नया युग शुरू कर सकती है। जब युवा दहेज को नकारेगा, तभी यह कुप्रथा समाप्त होगी। जब युवा पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी समझेगा, तभी आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ भारत मिलेगा। जब युवा स्वदेशी उत्पादों को अपनाएगा, तभी भारत आत्मनिर्भर बनेगा।

डिजिटल सोच की दिशा में कदम

आज का युवा टेक्नोलॉजी से जुड़ा हुआ है, लेकिन आवश्यकता है कि वह इसका उपयोग केवल मनोरंजन के लिए न कर, बल्कि ज्ञान, विकास और नवाचार के लिए करे। सोशल मीडिया पर केवल ट्रेंडिंग चीजें न देखे, बल्कि उसमें अपनी सकारात्मक बातों से बदलाव लाने की कोशिश करे। यूट्यूब पर केवल मजेदार वीडियो न देखें, बल्कि स्किल्स सीखने वाले चैनल भी देखें। मोबाइल का इस्तेमाल केवल चैट के लिए न करें, बल्कि उसके जरिए बिजनेस, कोर्स और करियर को मजबूत बनाएं।

बदलाव के उदाहरण

भारत में कई ऐसे युवा हैं जिन्होंने सोच बदलकर समाज में बदलाव लाया:

- अरुणाचल की पुलोम लोबोम – जिन्होंने अपनी सोच से महिलाओं को हथकरघा उद्योग में आत्मनिर्भर बनाया।
- तमिलनाडु की सुगंधा – जिन्होंने गांव में लड़कियों के लिए डिजिटल लर्निंग सेंटर शुरू किया।
- गुजरात के मयूर – जिन्होंने खेती के पारंपरिक तरीकों को छोड़कर ड्रोन और AI से खेती शुरू की।

इन युवाओं की सोच ने भारत के कोनों में रोशनी फैलाई है।

कैसे बदलें अपनी सोच?

- असफलता से न डरें: हर असफलता एक सबक होती है।
- सकारात्मक संगति में रहें: जिस वातावरण में आप रहते हैं, वही आपकी सोच को बनाता है।
- नई चीजें सीखें: रोज कुछ नया जानें, पढ़ें और उसे जीवन में उतारें।
- समय का सदुपयोग करें: वक्त को बर्बाद करना, जीवन को बर्बाद करना है।

- छोटी शुरुआत करें: बड़े बदलाव की शुरुआत हमेशा छोटे कदमों से होती है।

निष्कर्ष

"सोच बदलो, इंडिया बदलो" केवल एक आदर्श वाक्य नहीं, बल्कि हर युवा के जीवन का ध्येय होना चाहिए। जब हर युवा अपनी सोच को नकारात्मकता से निकालकर सकारात्मकता, रचनात्मकता और नवाचार की दिशा में ले जाएगा, तब भारत सच्चे अर्थों में विश्वगुरु बनेगा। युवाओं! ये समय है खुद को बदलने का, सोचने का, आगे बढ़ने का। क्योंकि जब आप बदलेंगे, तभी भारत बदलेगा।

आइए! संकल्प लें – आज से, अभी से – अपनी सोच को बदलें, और भारत को एक नई दिशा दें।

******